TATA STEEL FOUNDATION

PYARA FOUNDATION

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य पुरस्कार 2024

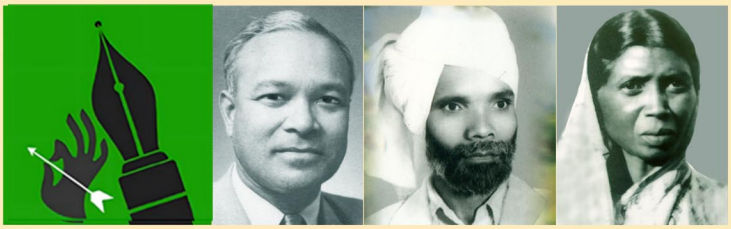

30 नवंबर 2024 रामदयाल मुंडा टीआरआई हॉल
मोराबादी, रांची (झारखंड)

TATA STEEL FOUNDATION

अवार्ड क्यों ?

हम, भारत के 700 से अधिक आदिवासी समुदाय, अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों में बसे हैं। हमारे पुरखों ने इन इलाकों को न केवल रहने लायक बनाया, बल्कि सांस्कृतिक परंपराओं से समृद्ध किया, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां परिवार, गोत्र और समुदाय की एकता के साथ जी सकें। लेकिन करीब पाँच हजार साल पहले आर्यों और औपनिवेशिक काल में फ्रांसीसी व ब्रिटिश शासकों ने हमारे इलाकों और संस्कृति का अतिक्रमण किया। यह सिलसिला आजादी के बाद भी 'मुख्यधारा' और संस्कृतिकरण के नाम पर जारी रहा, जिसने हमारे वाचिक साहित्य और ज्ञान परंपराओं को बुरी तरह प्रभावित किया।

संविधान निर्माण के समय हमारे प्रतिनिधि—जयपाल सिंह मुंडा और रेव. जेजेएम निकोल्स राय—ने हमारे अधिकारों की पैरवी की, लेकिन उनकी बातों को नजरअंदाज कर दिया गया। हमें संघीय गणतंत्र की नई व्यवस्था में 'अंतिम जन' बना दिया गया। नागा राष्ट्रीयता आंदोलन के हमारे नायक अंगामी जापू फिजो को निर्वासन झेलना पड़ा।

आजादी के बाद हम पर एक भाषा, एक धर्म, और एक संस्कृति थोपने की प्रक्रिया शुरू हुई, जो अब विकराल रूप ले चुकी है। हमें अपनी भाषा में बोलने-सुनने, पढ़ने-लिखने का कोई अवसर उपलब्ध नहीं है। राज्य और केंद्र की साहित्य अकादेमियों में हमारे साहित्य के लिए जगह नहीं है। आदिवासी भाषाओं और साहित्य के लिए कोई प्रकाशन नीति और संस्थान नहीं हैं। हमारे लेखक अपनी ही धरती पर असम्मानित हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2022-2032 को आदिवासी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय दशक घोषित किया है, जिससे उनके संरक्षण, पुनरुद्धार और संवर्धन के लिए संसाधन जुटाए जा सकें। लेकिन भारत सरकार अभी तक इस अंतर्राष्ट्रीय संकल्प से आंखें मूंदे हुए है।

औपनिवेशिक भाषाई नीति के खिलाफ सृजनात्मक संघर्ष प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन का प्राथमिक संकल्प है। इसी संकल्प के तहत 2022 के अंतर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस के अवसर पर फाउंडेशन ने आदिवासी भाषा, साहित्य और नए लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए 'जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य अवार्ड' की शुरुआत की है।

PYARA FOUNDATION

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

TATA STEEL FOUNDATION

अवार्ड किसको ?

जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य अवार्ड का उद्देश्य आदिवासी मातृभाषाओं, हिंदी-अंग्रेजी सहित किसी भी भारतीय भाषा में मौलिक और अप्रकाशित रचनाओं को मंच प्रदान करना है। हर वर्ष आदिवासी रचनाकारों से कविता, कहानी, उपन्यास, सामाजिक-राजनीतिक विमर्श, और अन्य साहित्यिक विधाओं में मौलिक पांडुलिपियाँ आमंत्रित की जाती हैं। यह अवार्ड हर आयु वर्ग के आदिवासी रचनाकारों का स्वागत करता है और उनकी सृजनशीलता को मान्यता देने के लिए प्रतिबद्ध है।

अवार्ड के तहत चुनी गई तीन सर्वश्रेष्ठ पांडुलिपियों का प्रकाशन किया जाता है। प्रत्येक विजेता को उनकी प्रकाशित पुस्तक की 50 प्रतियाँ निःशुल्क दी जाती हैं, 100 प्रतियों की अग्रिम रॉयल्टी दी जाती है, और पुस्तक की बिक्री पर सालाना 10% रॉयल्टी का भुगतान किया जाता है। रांची में आयोजित भव्य समारोह में विजेताओं को अंगवस्त्र, मानपत्र, और प्रतीक चिन्ह के साथ सम्मानित किया जाता है।

पिछले पुरस्कार विजेताओं की प्रेरणादायक सूची :

पहला साल 2022 :

- **धरती के अनाम योद्धा (कविता संग्रह)** – उज्जवला ज्योति तिग्गा, दिल्ली
- **डकैत देवसिंग भील के बच्चे (आत्मकथात्मक उपन्यास)** – सुनील गायकवाड़, महाराष्ट्र
- **कोंग्कोंग-फांग्फांग (कहानी संग्रह)** – रेमोन लोंग्कू, अरुणाचल प्रदेश

दूसरा साल 2023 :

- **'गोमpí गोमgk' (आदि-हिंदी द्विभाषी कविता संग्रह)** – डॉ. तुनुङ ताबिङ, अरुणाचल प्रदेश
- **हेम्टू (पावरा-हिंदी द्विभाषी कविता संग्रह)** – संतोष पावरा, महाराष्ट्र
- **सोमरा का दिसुम (बांग्ला से हिंदी अनूदित कहानी संग्रह)** – डॉ. पूजा प्रभा एक्का, पश्चिम बंगाल

और इस साल 2024 :

- **निरदन (सादरी काव्य संग्रह)** – शिखा मिंज
- **हिरवाल मेटा (गोंडी काव्य-कृति)** – विनोद मोतीराम आत्राम
- **सिरज़ोनरे जीवेदोक (संताली कविता संग्रह)** – आलबिनुस हेम्ब्रम

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

PYARA FOUNDATION

कार्यक्रम

सुबह 10 से 12.30 बजे :

जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य अवार्ड समारोह

1. सुमङना (स्वागत) जोहार
2. पुरखा (स्मरण) जोहार : झाभासासं अखड़ा के संगी-साथी
3. अखड़ा सुमङना (स्वागत) :
सुम्बरबोः ग्लोरिया सोरेङ - चेयर पर्सन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
4. अवार्ड एवं अवार्डियों का परिचय :
सुम्बरबोः वंदना टेटे, सेक्रेटरी, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
5. अवार्ड वितरण :
मुध गोतिया **सुम्बरबोः पद्मश्री डॉ. दमयंती बेसरा** द्वारा
6. अवार्डी कायोम (वक्तव्य) :
- सुम्बरबोः शिखा मिंज
- सुम्बरबोः विनोद मोतीराम आत्राम
- सुम्बरबोः आलबिनुस हेम्ब्रम
7. मुध गोतिया कायोम (वक्तव्य) :
सुम्बरबोः पद्मश्री डॉ. दमयंती बेसरा
8. वीडियो गीत समर्पण :
सुम्बरबोः अश्विनी कुमार पंकज
9. आभार जोहार :
सुम्बरबोः शिव शंकर कांड्यांग, टाटा स्टील फाउण्डेशन

सत्र संचालन : **सुम्बरबोः शांति सावैयां**

*12.30 से 2.00 बजे : **पतरी भात***

दोपहर 2 बजे से :

बहुभाषाई आदिवासी-देशज दुरङ परफॉरमेंस

सत्र संचालन : **सुम्बरबोः आश्रिता कंडुलना**

10. असुर लूर अखड़ा, जोभीपाट/लोदापाट के बच्चों द्वारा दुरङ प्रस्तुति.
11. आमंत्रित कवि/गीतकार/गायक :
रोशनी असुर, श्रद्धानंद असुर (असुर); मोनिका सिंह (भूमिज); विष्णु बिरहोड़ (बिरहोड़); सामुएल बिरजिया (बिरजिया); विनोद मोतीराम आत्राम (गोंडी); पानी पूर्ति (हो); नीता कुसुम बिलुङ (खड़िया); शांति भारत (खोरठा); डॉ. शांति खलखो (कुड़ुख); रतन कुमार महतो 'सत्यार्थी' (कुड़माली); ललित किशोर नाग, जादु मुण्डा (मुण्डारी); विकी मिंज (नागपुरी); विष्णु चरण सिंह मुण्डा (पंचपरगनिया); शिखा मिंज (सादरी); लोदेम मार्डी, आलबिनुस हेम्ब्रम (संताली).
12. बिरजिया लूर अखड़ा, रांची के बच्चों द्वारा दुरङ प्रस्तुति.

आभार जोहार: **सुम्बरबोः डॉ. प्रीति रंजना डुंगडुंग**

PYARA FOUNDATION

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

अगुआ जन को जोहार

जयपाल सिंह मुंडा

भारतीय राजनीति में आदिवासी हक-हकूक के मरङ गोमके (सर्वोच्च अगुआ). आदिवासियत के सिद्धांतकार और संविधान-निर्माता. 1928 की ओलंपिक में वर्ल्ड चौम्पियन भारतीय हॉकी टीम के कैप्टन. आदिवासी महासभा और झारखंड पार्टी के अध्यक्ष.

जुलियुस तिग्गा

40 के दशक के आदिवासी आंदोलन के प्रखर बौद्धिक अगुआ. आदिवासी महासभा के महासचिव. गुलाम भारत में लिखने के लिए जेल जाने वाले पहले आदिवासी पत्रकार और संपादक. 50 के दशक में आदिवासी शिक्षा और संस्कृति का मॉडल खड़ा करने वाले पहले आदिवासी शिक्षाविद्.

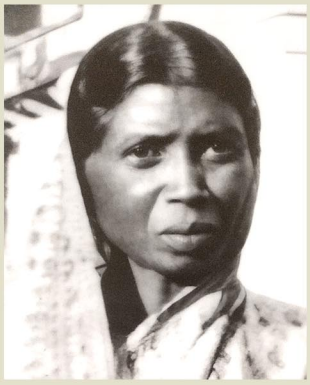

हन्ना बोदरा

आदिवासी महासभा के महिला संघ की अध्यक्ष. भारत की आधुनिक राजनीतिक इतिहास में सबसे प्रखर लड़ाकू महिला. झारखंड के आदिवासी आंदोलन में महासभा और झारखंड पार्टी के बैनर तले मलिाओं को संगठित और उनकी अगुआई करने वाली सबसे तेजतर्रार आदिवासी नेत्री.

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

PYARA FOUNDATION

पद्मश्री डॉ. दमयंती बेसरा

संताली साहित्य की प्रतिष्ठित शख्सियत डॉ. दमयंती बेसरा को 2020 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वे संताली भाषा की पहली महिला लेखिका हैं और उनके लेखन कार्य में संताली में 22 और उड़िया में 9 पुस्तकें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 9 पुस्तकों का संताली में अनुवाद भी किया है। उनके द्वारा रचित कविता संग्रह 'सय सेहेद' (एक सौ साँसें, 2006) के लिए उन्हें 2009 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनका पहला काव्य संग्रह 'जिवि झरना' 1994 में प्रकाशित हुआ था, जिसके लिए उन्हें ऑल इंडिया संताली राइटर्स एसोसिएशन से 'वर्ष का कवि' पुरस्कार मिला था।

2011 से 2013 के बीच, डॉ. बेसरा ने संताली की पहली महिला पत्रिका 'करम डार' का प्रकाशन किया। 2021 में, जयदेव के 'गीता गोविंद' (2018) के संताली अनुवाद के लिए उन्हें अकादमी का अनुवाद पुरस्कार मिला। 2023 में, उन्होंने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की जीवनी संताली में लिखी। डॉ. बेसरा ऑल इंडिया संताली राइटर्स एसोसिएशन की आजीवन सदस्य हैं और बारीपदा (ओडिशा) में रहती हैं।

अवार्डी

1. निरदन

सादरी कविता संग्रह

शिखा मिंज

उरांव, बाघाजोत, सिलिगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

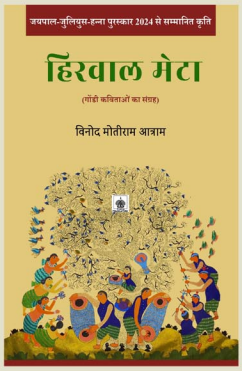

2. हिरवाल मेटा

गोंडी कविता संग्रह

विनोद मोतीराम आत्राम

गोंड, नांदेड़ (महाराष्ट्र)

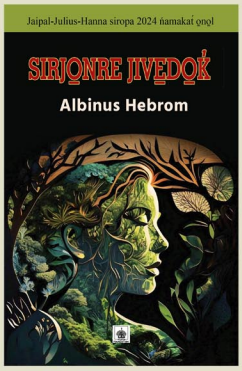

3. सिरजोनरे जीवेदोक

संताली कविता संग्रह

आलबिनुस हेम्ब्रम

संताल, पहाड़पुर, हिरणपुर, पाकुड़ (झारखंड)

लेयुस-हन्ना साहित्य पुरस्कार समारोह 2023
pal-Julius-Hanna Literary Award Ceremony 2023
बहुभाषाई आदिवासी-देशज दुरङ प्रस्तुति
Multilingual First Nations Song Performance
Press Club
23 | Ranchi (Jharkhand)
अखड़ा
हेमू
गोमके गोमुके

TATA STEEL FOUNDATION

PYARA FOUNDATION

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

Jaipal-Julius-Hannah Literary Award 2024

30 November 2024

RD Munda TRI Hall, Ranchi (Jharkhand)

TATA STEEL FOUNDATION

Why an Award?

We, the 700+ Adivasi (First Nations) communities of India, are spread across diverse geographical regions. Our ancestors not only made these regions habitable but also enriched them with cultural traditions, ensuring that future generations could live in harmony within their families, clans, and communities. However, about five thousand years ago, the Aryans, and later during the colonial period, French and British rulers encroached upon our lands and culture. This encroachment continued post-independence under the guise of "mainstreaming" and cultural assimilation, which severely impacted our oral literature and knowledge traditions.

During the framing of the Constitution, our representatives, Jaipal Singh Munda and Rev. JJM Nichols Roy, advocated for our rights. Yet, their voices were largely ignored, relegating us to the status of "the last citizens" (Antim Jan) in the newly established federal republic. Our leader of the Naga National Movement, Angami Zapu Phizo, was forced into exile.

Post-independence, a process of imposing a single language, religion, and culture on us began, which has now reached alarming proportions. We have no opportunities to speak, listen, read, or write in our own languages. Our literature finds no place in the literary academies of the state or centre. There are no publishing policies or institutions dedicated to Adivasi languages and literature. Our writers face disrespect on their own land.

The United Nations General Assembly has declared 2022–2032 as the International Decade of Adivasi Languages, aiming to mobilise resources for their preservation, revival, and promotion. Yet, the Government of India remains indifferent to this international commitment.

The *Pyara Kerketta Foundation* is dedicated to creatively resisting colonial linguistic policies. As part of this commitment, the foundation launched the *Jaipal-Julius-Hanna Literary Award* on the occasion of the International Day of the World's Indigenous Peoples in 2022, to encourage Adivasi languages, literature, and emerging writers.

PYARA FOUNDATION

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

TATA STEEL FOUNDATION

Who Receives the Award?

The *Jaipal-Julius-Hanna Literary Award* aims to provide a platform for original and unpublished works in Adivasi (First Nations) mother tongues, as well as in any Indian language, including Hindi and English. Each year, Adivasi writers are invited to submit original manuscripts in genres such as poetry, short stories, novels, socio-political discourses, and other literary forms. This award welcomes Adivasi creators of all age groups and is committed to recognizing their creativity.

The award includes the publication of the three best-selected manuscripts. Each winner receives 50 complimentary copies of their published book, an advance royalty for 100 copies, and an annual royalty of 10% on book sales. Winners are honored at a grand ceremony in Ranchi, where they receive a traditional shawl, a citation, and a memento.

Inspiring List of Previous Winners :

First Year (2022) :

- **Dharati ke Anam Yoddha** (Poetry Collection) – Ujjwala Jyoti Tigga, Delhi
- **Dacoit Devsing Bheel ke Bacche** (Novel) – Sunil Gaikwad, Maharashtra
- **Kongkong-Fangfang** (Story) – Remon Longku, Arunachal Pradesh

Second Year (2023) :

- **Gompí Gomuk'** (Adi-Hindi Poetry) – Dr. Tunung Tabing, Arunachal Pradesh
- **Hemtū** (Pawara-Hindi Poetry Collection) – Santosh Pawara, Maharashtra
- **Somra ka Disum** (Translated Story) – Dr. Pooja Prabha Ekka, West Bengal

This Year (2024) :

- **Nirdan** (Sadri Poetry Collection) – Shikha Minj
- **Hirwal Meta** (Gondi Poetry Collection) – Vinod Motiram Atram
- **Sirjonre Jivedoḱ** (Santali Poetry Collection) – Albinus Hembrom

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

PYARA FOUNDATION

SCHEDULE

10:00 AM to 12:30 PM :

Jaipal-Julius-Hannah Literary Award Ceremony

1. Sumangana Johar (Welcome) : Traditional greetings
2. Ancestral Tribute : By JBSS Akhra companions
3. Welcome Address :
   Gloria Soren, Chairperson, Pyara Kerketta Foundation
4. Introduction to the Awards and Awardees:
   Vandna Tete, Secretary, Pyara Kerketta Foundation
5. Award Presentation:
   Padma Shri Dr. Damayanti Beshra
6. Awardees' Speeches:
   Sikha Minj (West Bengal)
   Vinod Motiram Atram (Maharashtra)
   Albinus Hembrom (Jharkhand)
7. Chief Guest Address:
   Padma Shri Dr. Damayanti Beshra
8. Video Song Dedication:
   Ashwini Kumar Pankaj
9. Vote of Thanks :
   Shiv Shankar Kandyang, Tata Steel Foundation

Session Moderator :
Shanti Sawaiyan

*12:30 PM to 2:00 PM : **Patri Bhaat (Lunch)***

From 2:00 PM Onwards :

Multilingual Adivasi-Indigenous Durang Performance

Session Moderator : **Ashrita Kandulna**

10. Durang by children of **Asur Loor Akhra, Jobhipat/Lodapat villages**

11. Invited Poets/Songwriters/Singers :
Roshni Asur, Shraddhanand Asur (Asur), Monika Singh (Bhumij), Vishnu Birhor (Birhor), Samuel Birjia (Birjia), Vinod Motiram Atram (Gondi), Pani Purti (Ho), Neeta Kusum Bilung (Kharia), Shanti Bharat (Khortha), Dr. Shanti Khalkho (Kurukh), Ratan Kumar Mahato 'Satyarthi' (Kurmali), Lalit Kishore Nag, Jadu Munda (Mundari), Vicky Minz (Nagpuri), Vishnu Charan Singh Munda (Panchpargania), Sikha Minj (Sadri), Lodem Mardi, Albinus Hembrom (Santali)

12. Durang by children of **Birjia Loor Akhra, Ranchi**

Vote of Thanks :
Dr. Preeti Ranjana Dungdung

PYARA FOUNDATION

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

JOHAR TO PATHFINDERS

Jaipal Singh Munda

The *Marang Gomke* (Supreme Leader) of Adivasi rights in Indian politics. A visionary of Adivasi ideology and a key architect of the Indian Constitution. Captain of the Indian hockey team that became World Champions at the 1928 Olympics. President of the Adivasi Mahasabha and the Jharkhand Party.

Julius Tigga

A prominent intellectual leader of the Adivasi movement in the 1940s. General Secretary of the Adivasi Mahasabha. The first Adivasi journalist and editor to be imprisoned for his writings in colonial India. A pioneering Adivasi educationist of the 1950s who established a model for Adivasi education and culture.

Hannah Bodra

President of the women's wing of the Adivasi Mahasabha. One of the fiercest women in India's modern political history. A formidable Adivasi leader who organized and led women under the banners of the Adivasi Mahasabha and Jharkhand Party during the Adivasi movement in Jharkhand.

झारखण्डी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा

PYARA FOUNDATION

Chief GUEST

Padma Shri Dr. Damayanti Beshra

Dr. Damayanti Beshra, a distinguished figure in Santali literature, was honored with the Padma Shri in 2020. She is the first female author in the Santali language, with an impressive body of work comprising 22 books in Santali and 9 in Odia. Additionally, she has translated 9 books into Santali. Her poetry collection "Say Sehed" (A Hundred Breaths, 2006) earned her the Sahitya Akademi Award in 2009. Her first poetry collection, "Jivi Jharna" (Living Spring), published in 1994, won her the Poet of the Year award from the All India Santali Writers' Association.

Between 2011 and 2013, Dr. Beshra published Santali's first women's magazine, "Karam Dar". In 2021, she received the Sahitya Akademi Translation Award for her Santali translation of Jayadev's "Gita Govinda" (2018). In 2023, she wrote the biography of President Droupadi Murmu in Santali. Dr. Beshra is a lifetime member of the All India Santali Writers' Association and resides in Baripada, Odisha.

Awardees'

1. Nirdan

Sadri poetry collection

Sikha Minj

Oraon, Baghajot, Siliguri (WB)

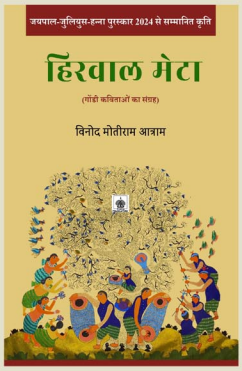

2. Hirwal Meta

Gondi poetry collection

Vinod Motiram Atram

Gond, Nanded (Maharashtra)

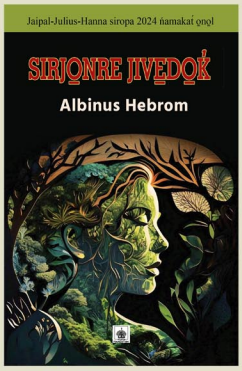

3. Sirjǫnrę Jivędǫḱ

Santali poetry collection

Albinus Hembrom

Santal, Paharpur, Hiranpur, Pakur (Jharkhand)

जयपाल-जुलियुस-हन्ना साहित्य पुरस्कार समारोह 2023
Jaipal-Julius-Hanna Literary Award Ceremony 2023
Multilingual First Nations Song Pe ance
Ranchi Press Club | 26 ber 2023 | Ranch and)
RANCHI

Published by the Pyara Kerketta Foundation, Ranchi, with the support of the Tribal Culture Society (an ethnicity wing of Tata Steel Foundation), Jamshedpur, and printed at Errorless Books Pvt. Ltd., Noida (UP).
November 2024 | www.kharia.org | toakhra@gmail.com